ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS: लोक साहित्य, संस्कृति, समुदाय, कथाएँ, विधाएँ।

राजस्थानी रियासत की प्रमुख लोक कथाओं में वर्णित सांस्कृतिक पहलू : एक अध्ययन

प्रो. डॉ. कमलेश शर्मा वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

प्रभावती मालव वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

ABSTRACT

राजस्थानी संस्कृति कई विधाओं को समेटे हुए लोक समुदाय को प्रफुल्लित करने का एक सुकून है। यहाँ की संस्कृति में लोक साहित्य, लोक गीत, लोकनाटय, संगीत, वाद्य, गाथाएँ विद्यमान है जो वास्तविक जीवन की झलक को भी गंभीरता, मृदुलता से प्रस्तुत करती ह। जन समुदाय में प्रचलित अज्ञात व्यक्ति द्वारा रचित कहानी जिसमें भाषा, विचार और भावों की सरलता उसे लोककथा कहा गया है जो परम्परागत वसीयत के रूप में हमें प्राप्त हुई है। लोक कथाएँ देश के सभी क्षेत्रों में का साहित्यिक हिस्सा होती है, परन्तु राजस्थान इसका मुख्य केन्द्र है। लोककथाओं में बलिदान, समर्पण, मनोरंजन, शिक्षा, प्रेम, सौन्दर्य, घृणा, उपदेश, मनोविज्ञान धार्मिकता सभी पहुलओं का अलग–अलग तरीके से करने के लिए क्षेत्रीय लोक कथाओं का हृदयंगम करना जरूरी है। ये रूचिपूर्ण लोक कथाएँ जनसमुदाय के मन मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ती है। इन कथाओं से सामाजिक बुराइयों, कुरीतियों को मिटाकर जनमानस के पटल पर एक स्वच्छ छवि का निर्माण कर सकते है।

प्रस्तावना –

लोक साहित्य में कहीं नृत्य, कहीं संगीत, वाद्य, कहीं गीत, कही गाथाएँ तो कहीं नाट्य रंग–बिरंगे रूपों में झूमते से नजर आते हैं, लोक साहित्य इन कई विधाओं को समेटे हुए हैं। इन्हीं में से लोकप्रिय विधा है लोक कथाएँ।

लोक अथवा जन समुदाय में प्रचलित किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा रचित कोई परम्परागत कहानी जिसमें भाषा, विचार और भावों की सरलता होती है। ये कहानियाँ मनुष्य की कथा प्रवृत्ति के साथ चलकर विभिन्न परिवर्तनों, परिवर्धनों के साथ वर्तमान रूप में प्राप्त होती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कुछ निश्चित कथानक रूढ़ियों और शैलियों में ढली लोक कथाओं के अनेक संस्करण, उसके नित्य नई प्रवृत्तियों और चरित्रों से युक्त होकर विकसित होने के प्रमाण है। एक ही कथा विभिन्न सन्दर्भों, अंचलों में बदलकर अनेक रूप ग्रहण करती है। लोकगीतों की भाँति लोक कथाएँ भी हमें परम्परागत वसीयत के रूप में प्राप्त है। लोककथाओं की प्राचीनता के संदर्भ में, इन लोक कथाओं का प्रादुर्भाव कब, कहाँ, कैसे किसके द्वारा हुआ यह बताना गहन अनुसंधान का विषय है लेकिन कथाओं की प्राचीनता को ढूँढते हुए अंत में अन्वेषक ऋग्वेद के उन सूक्तों पर पहुँचकर रूक गए हैं जिनमें कथोपकथन के माध्यम से "संवाद सूक्त" कहे गए हैं। पीछे ब्राह्मण ग्रंथों, उपनिषदों में भी परम्परा विद्यमान है। किन्तु इन सबसे पूर्व कोई कथा कहानी थी ही नहीं ऐसा नहीं कहा जा सकता, प्रश्न उठता है जो प्रथाएँ उन सब में आई है उनका उदगम कहां है? जहां उनका उदगम होगा लोक कथाओं का भी वहीं आरंभिक स्थान माना जाना चाहिए। पंचतंत्र की बहुत सी कथाएँ, लोककथाओं के रूप में जन जीवन में प्रचलित है। किन्तु यह भी सत्य है कि जितनी कथाएँ लोक जीवन में मिल जाती है, उतनी पंचतंत्र में भी नहीं मिलती।

लोक कथाएँ तो हमारे देश के सभी भागों में प्रचुर मात्रा में पाई जाती है, परन्तु राजस्थान तो इनका प्रमुख केन्द्र है। यहाँ के नर–नारियों ने बड़ी ही रूचिपूर्ण सरस कथाएँ इस प्रदेश में छोड़ दी है। इतिहास में तो कुछ लोगों की जीवन कहानी रहती है परन्तु लोक हृदय पर ऐसे अगणित व्यक्ति अमिट रेखाएँ खींच जाते हैं, जिनका इतिहास में कहीं जिक्र भी नहीं मिलता। राजस्थानी लोक कथाएँ अपनी विशेषता लिए हुए हैं। लोक समुदाय के जीवन का अध्ययन करने के लिए यहाँ की जन कथाओं को हृदयंगम करना जरूरी है। इनमें वास्तविक जीवन की झलक भी है, और अर्थ की गंभीरता भी, मृदुलता भी है और निर्देश भी। राजस्थानी लोक कथाओं के विविध प्रकार है। दुनियाँ के सारे रंग, आनन्द, सुकून, जनकल्याण, धार्मिकता, मनोविज्ञान, मानवता, नीति, सदाचार, शोषण, समानता, असमानता, लिंगभेद, त्याग, बलिदान, सर्मपण, मनोरंजन, शिक्षा, प्रेम, उपदेश, सौन्दर्य, घृणा इनमें समाहित है।

राजस्थानी जनकथाओं में वीरता की कहानियाँ सर्वाधिक है। ये कहानियाँ ही राजस्थान का प्राण है। राजस्थान वीरता के आदर्शों से ओत–प्रोत है गोर बादल, अमरसिंह राठौड़, सादूलों भाटी आदि। इन कथाओं में कैसे–कैसे शौर्य एवं बलिदान के आदर्श प्रस्तुत किये है, मनुष्य का स्वभाव हमेशा से कीर्ति के लिए प्रयासरत रहा है।

बाल कथाएँ नन्हें शिशुओं को सुनाई जाती है, जो बहुत छोटी होती है इनमें किसी प्रकार की शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया जाता। कागलो पर कोचरी, चीड़ो–चीड़ी आदि।

बाल जगत की परियों की कहानियाँ बना पाणी को महल, दूध में साँप, जिन्नां की बस्ती, भूत सेरणी आदि।

धार्मिक कथाएँ आसा भागोती, मँगला, गोरी, प्रेम कथाओं में ढोला मरवण, जगमल भारमा, रूठी–राणी, मूमल–महिन्द्रा आदि है। इन प्रेम कथाओं में वीरता, बिरह, मधुर मिलन, वियोग आदि का समावेश है। परेशानियों में भी उच्चतम जीवन की समीक्षा करना इन कहानियों का लक्ष्य है।

राजस्थान की लोक कथाओं में ढोला मारू प्रेम गाथा विशेष लोक प्रिय रही है। इस प्रेमाख्यान का नायक ढोला, नरवर के राजा नल का पुत्र था जो कछवाहा राजवंश से सम्बन्धित है जिसे इतिहास में ढोला व सातह कुमार के नाम से जाना जाता है। ढोला का विवाह बालपन में जांगल देश (बीकानेर) के पूँगल नाम ठीकाने के स्वामी पंवार राजा पिंगल की पुत्री मारवणी के साथ हुआ था। उस वक्त ढोला 3 वर्ष का, मारवणी 1) वर्ष की थी। इसलिए मारवणी को ढोला के साथ नरवर नहीं भेजा गया था। बड़े होने पर ढोला की एक और शादी मालवणी के साथ हो गयी और ढोला बचपन की शादी को लगभग भूल चुका था। मारवणी को ढोला के बारे में जानकर उसे पाने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा। इस प्रेम संघर्ष में मारवाणी का अपने पति के प्रति विरह, प्रेम, जीवन दान, षड़यन्त्र आतिद चक्रव्यूह से निकलकर ढोलामारू की कहानी इन लोक कथाओं का महत्वपूर्ण हिस्सा बनी। इस लोक कथा में बाल विवाह का गम्भीर दुष्परिणाम मारवणी को झेलना पड़ा। इस वंश (कछवाहा वंश) का एक राजकुमार दुतहे राय राजस्थान आया और उसके पुत्र काकिल देव ने मीणा को परास्त कर आमेर पर अपना राज्य स्थापित किया। इसके वंशजों में स्व. भैरोसिंह जी शेखावत व श्री देवसिंह शेखावत की धर्म पत्नि श्रीमती प्रतिभा पाटिल इस देश की राष्ट्रपति रही।

रूठी रानी की प्रेम कथा में राजकुमार उमादे, राव मालदेव व दासी भारमली की त्रिकोणिय कहानी में रानी उमादे जीवन भर, राव से रूठी रही एवं उनके निधन पर जलती चिता में प्रवेश कर सती हो गई। यह कहानी हमें सोचने पर विवश करती है कि यह कैसा प्रेम है जो जीवन रहते पा ना सके और मरकर सती प्रथा का सहारा लिया गया।

राजस्थान रियासत की प्रमुख कथाओं में जन समाज की अच्छाई–बुराई सभी कुछ इनमें मिलेगी। दोनों का सम्मिश्रण सांस्कृति पहलु है। विविध मान चरित्र इन कथाओं में होते है, इनमें सबसे बड़ा तत्व कौतुहल, जिज्ञासा, घटनाक्रम, मनोरंजन आदि का होता है। इन लोक कथाओं के माध्यम से हम समाज की कुरीतियों को मिटा कर समाज के मानस पटल पर एक स्वच्छ छवि का निर्माण कर सकते हैं। चरित्र निर्माण मानवीय मूल, त्याग, बलिदान राजस्थान संस्कृति के महत्वपूर्ण पहलुओं की रक्षा कर सकते हैं।

सन्दर्भिका :–

1. डॉ. अभिनव कमल रैना : राजस्थान संस्कृति के विविध आयाम (पधारो म्हारे देस) अभिनव प्रकाशन, अजमेर
2. देवी सिंह मंडावा : कच्छवाहों का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2001
3. चेतन शर्मा : उपनिष्दों की कथाएँ, पाराशर पुस्तक भण्डार, 2004
4. अर्जुन सिंह शेखावत : राजस्थानी व्रत कथावां साहित्य अकादमी
5. सावित्री परमार : लोक संस्कृति के शिखर श्याम प्रकाशन जयपुर, 1997

शोध पत्रिका

1. भारत की लोक कला निधि, शंकर भाग प्रथम, सी.बी.टी प्रकाशन ैठछ 81.7011.053.ग प्रकाशित वर्ष 1998

शोध पत्र

1. डॉ. ज्योत्सना रावतः गढ़वाली लोक गीत : एक परिचय, 2013, इन्टरनेशनल सोशिआलॉजी एण्ड ह्यूमिनिटिज